हिन्दूस्तान 06 मई 2015

हौसला रखें किसान, उपजेगा सोना

हिन्दुस्तान लाइव
एग्रीकल्चर टूर

नो..नो..यू हैव टू मीट विद् दि एडवर्स कंडीशन्स! राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआई) पहुंचे आस्ट्रेलिया के किसानों और शिक्षकों का कहना था कि भारत के किसान प्रतिकूल मौसम और फसलों की तबाही से निराश न हों। इन हालात का सामना कर 'सोना' उपजाएं। यह सब संभव हो सकता है अगर वे खेती के अर्जेंटीना मॉडल को अपनाएं। यांत्रिकीकरण (मैकेनाइजेशन) पर जोर दें। खेतों पर अपना मालिकाना हक बनाए रखें लेकिन खेती मिलकर करें। इससे उत्पादन बढ़ जाएगा। तब किसान खुशहाली के गीत गा सकेंगे। 29 सदस्यीय आस्ट्रेलियाई दल ने एनएसआई के कृषि वैज्ञानिकों के साथ अपने अनुभव साझा किए। कृषि विशेषज्ञों ने दोनों देशों की कृषि तकनीक और मौसम की तुलनात्मक रिपोर्ट पेश की। इस दल ने तकनीकी खेती पर जोर दिया।

तकनीकी खेती से सुधरेगी आर्थिक सेहत

आस्ट्रेलिया से डेल प्राइज के नेतृत्व में आई 29 सदस्यीय टीम और एनएसआई के निदेशक प्रोफेसर नरेन्द्र मोहन व अन्य वैज्ञानिकों के बीच कई बिन्दुओं पर चर्चा हुई। डेल प्राइज का कहना था कि आस्ट्रेलिया में किसानों की औसत उम्र 55 साल है। वे काफी फिट रहते हैं। हमने पंजाब में देखा कि यहां के लोग खुद खेतों में काम करना नहीं चाहते हैं। पंजाब के लोगों ने बताया कि यहां के युवा शहर चले जाते हैं। ऐसे में इनकी उर्वर जमीन में मशीनों से की गई खेती काफी उपयोगी साबित हो सकती है।

आस्ट्रेलिया में मानव संसाधन कम है। हमने इसी वजह से मैकेनाइजेशन पर अधिक जोर दिया। हमारे पास पर्याप्त भूमि है। ऐसा नहीं है कि हमारे देश में कृषि से जुड़ी समस्याएं नहीं हैं। हम आज एनएसआई में हैं जिसकी एक खासियत यह है कि यहां से समस्याओं के हल मिलते हैं। हम चाहते हैं कि छोटी जोत में मालिकाना हक बनाए रखते हुए अगर मशीनों से खेती की जाए तो इससे किसानों की आर्थिक सेहत अच्छी होगी। आस्ट्रेलिया का मौसम और हिन्दुस्तान का मौसम अलग-अलग है और खेती करने के तरीके भी जुदा हैं। बताया कि आस्ट्रेलिया का किसान मौसम और तकनीक से खेती को बेहतर बनाए है।

एनएसआई पहुंचे आस्ट्रेलिया के 29 सदस्यीय दल ने कृषि की आधुनिक तकनीक साझा की। बताया कि तकनीक अपनाकर किसान कैसे अपनी आर्थिक स्थिति सुधार सकते हैं।

◄ एनएसआई पहुंचे मेहमानों का तिलक लगाकर स्वागत किया गया।

► आस्ट्रेलिया की टीम ने एनएसआई की चीनी तकनीक को परखा।

भारतीय चीनी उद्योग के कुछ तथ्य

24	मिलियन टन चीनी की भारत में डिमांड है जिसमें केवल एक तिहाई चीनी बाजार को चाहिए। शेष विभिन्न इंडस्ट्री में उपयोग में लाई जाती है।
25.5	मिलियन टन हर साल चीनी का उत्पादन होता है अपने देश में। यह चीनी देश में सरप्लस होती जा रही है। ग्लोबल रेट कम होने से भी संकट है।
118	यूपी में और पूरे देश में 509 चीनी मिलें हैं। सल्फर फ्री चीनी तैयार करने पर सबसे ज्यादा ध्यान दिया जा रहा है।
5%	पेट्रोल में ब्लेंडिंग करने के लिए 150 करोड़ लीटर एथनॉल चाहिए। यदि दस फीसदी मिलाना हो तो 300 करोड़ लीटर की जरूरत।
07	चीनी के मानक हैं देश में। यह सभी मानक तय करने का अधिकार राष्ट्रीय शर्करा संस्थान यानी एनएसआई का है।

हिन्दूस्तान 06 मई 2015

आस्ट्रेलिया में किसानों को सब्सिडी नहीं

आस्ट्रेलियाई किसानों ने बताया कि उन्हें सब्सिडी नहीं मिलती। वे रासायनिक खादों का उपयोग मिट्टी की जांच के बाद करते हैं। मृदा स्वस्थ रखने के प्रयास हर स्तर पर किए जाते हैं। मौसम प्रतिकूल होना हर जगह संभव है लेकिन इससे निपटने के लिए हमें अपनी तरह की जरूरतों के हिसाब से तैयार रहना होगा। भारत में खेती खूब होती है। आस्ट्रेलिया में भी अनाज से लेकर दालों तक का उत्पादन होता है।

तरल चीनी के शोध पर फिदा विशेषज्ञ

एनएसआई में एक ऐसा शोध चल रहा है जिस पर आस्ट्रेलियाई टीम फिदा हो गई। यह शोध है चीनी को तरल रूप में लंबे समय तक संरक्षित रखने का। चीनी को बिना किसी प्रसंस्करण के अगर तरल रूप में सुरक्षित रखा जाता है तो आने वाले समय में इसके कई उपयोग बढ़ जाएंगे। गन्ने में चिप के माध्यम से मानकों को पता करने की तकनीक भी देखी। एनएसआई के निदेशक ने बताया कि संस्थान की उपलब्धियां बताईं। कहा कि संस्थान चीनी उत्पादन पर लगातार शोध कर रहा है।

बायोफ्यूल पर रहता है जोर

हमारे देश में पेट्रोल में 10 फीसदी एथनॉल ब्लेंडिंग करते हैं। इसके लिए गेहूं आदि का अतिरिक्त उत्पादन किया जाता है। एनएसआई ने इस क्षेत्र में कसावा, शुगरबीट समेत अन्य विकल्प भी ऑस्ट्रेलियाई टीम को सुझाए जिससे एथनॉल उत्पादन किया जा सकता है।

आस्ट्रेलियाई टीम ने एनएसआई को कंगारू किए गिफ्ट

आस्ट्रेलियाई दल जब संस्थान के गेस्ट हाउस पहुंचा तो इनका स्वागत तिलक लगाकर किया गया। इससे इनके चेहरों पर काफी खुशी नजर आई। इनका अभिवादन नमस्ते कह कर किया गया। इनमें कुछ ने बाद में इसका अर्थ पूछा और बाद में वे मुलाकात के दौरान गुड आफ्टरनून के स्थान पर नमस्ते-नमस्ते कहते रहे। दल के सदस्यों ने स्वागत से गदगद होकर निदेशक प्रोफेसर नरेन्द्र मोहन, डॉ. सीमा परोहा और डॉ. स्वैन को टोकन स्वरूप गिफ्ट दिए।

टूरिस्ट बस से घूम रहे भारत

ऑस्ट्रेलिया के 29 सदस्यीय दल ने दिल्ली, पंजाब, राजस्थान और उत्तर प्रदेश का दौरा करने के लिए टूरिस्ट बस का सहारा लिया है। इस बस पर करीब दस लाख का खर्च आया है। ड्राइवर सुरजीत सिंह ने बताया कि जिस बस में वे भ्रमण पर निकले हैं वह आधुनिक सुविधाओं से लैस है। इसी में टॉयलेट आदि है। टीम के सदस्य इतने ज्यादा शालीन हैं कि वे बस में प्रवेश से पहले अपने पैर साफ करते हैं। रास्ते में वे आपस में चर्चा भी करते हैं तो कोई शोर नहीं होता। अब टीम लखनऊ पहुंचेगी जिसके बाद इलाहाबाद के लिए रवाना हो जाएगी। 13 मई को इस टीम का दौरा खत्म हो जाएगा।

दोनों देशों के बीच होंगे कई समझौते

जिलियन एलिजाबेथ मैथरोल और नोयल रिचर्ड थॉमस ने कहा कि एनएसआई के साथ वे कुछ बिन्दुओं पर समझौता कर सकते हैं। कम लागत, मशीनीकरण के अधिक उपयोग, चीनी उत्पादन में यानी के जीरो डिस्चार्ज और ऐसे ही अन्य बिन्दुओं पर ऑस्ट्रेलियन शुगर इंडस्ट्री चाहत है कि वह एनएसआई के साथ कुछ मुद्दों पर आपसी सहमति जताए। ब्रूस ऑलिवर, गैरी रसेल और पॉल डॉयल ने भी इस पर सहमति जताई।

बोले एक्सपर्ट

मौसम का सामना करने के विकल्प खोजें

हम पहली बार इंडिया आए हैं। पिछले कई दिनों से इस देश के विभिन्न राज्यों में गए हैं। हमारे दल में केवल वह किसान नहीं हैं जो गन्ना पैदा करते हैं। कई ऐसे हैं जो गेहूं का उत्पादन करते हैं। हमारे देश के हर कोने में अलग-अलग क्लाइमेट है। हमें चाहिए कि हम प्रतिकूल मौसम का सामना करना सीखें। विकल्प तलाशें। आस्ट्रेलिया में किसान ज्यादातर अमीर हैं लेकिन गरीब भी हैं। ब्रूका हेवुड, किसान

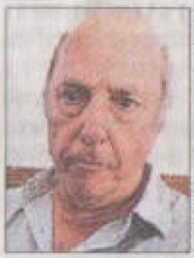

भारतीय कृषि क्षेत्र बहुत बड़ा

हमें इंडिया बहुत अच्छा लगता है। मैं यहां अपनी पत्नी के साथ आ चुका हूं। यहां कई मन्दिरों को देखा है। भारत से जुड़ी कई किताबें पढ़ी हैं। यहां का साहित्य पढ़ने से पूरे भारत के बारे में जानकारी मिल जाती है। भारत और भारतीय संस्कृति के बारे में काफी कुछ समझ है। ऑस्ट्रेलिया का क्लाइमेट भी भारत जैसा ही है। कहीं बर्फ ही बर्फ है तो कहीं उपजाऊ भूमि तो कहीं रेगिस्तान। पॉल ऑक्टेस

हमने कई प्रांतों का दौरा किया

हमने भारत के कई प्रांतों का दौरा किया है। हमें यहां बहुत अच्छा लगा। आस्ट्रेलिया क्षेत्रफल की दृष्टि से बहुत बड़ा है। वहां के कुछ प्रांत यहां से बहुत मिलते जुलते हैं। हमें पंजाब में अच्छा लगा। किसानों ने बताया कि मौसम खराब होने की वजह से काफी खेत खाली हो गए हैं। यहां लोगों का व्यवहार अच्छा है। वे काफी वेलकम करते हैं। यहां किसान मशीनों का उपयोग नहीं करता है। जेन मैक्ग्वॉयर, किसान की पत्नी

एनएसआई अद्भुत संस्था

इंडिया में आए लंबा समय हो गया है। एनएसआई अद्भुत संस्था है। यहां पढ़ाते भी हैं। किसानों के हित भी देखते हैं। चीनी मिलों को यह संस्थान सलाह भी देता है। इस तरह की संस्थाएं होनी चाहिए। इस तरह के संस्थान काफी उपयोगी साबित होते हैं। यहां केवल गन्ना और चीनी के बारे में अध्ययन किया जाता है। दुनिया में दूसरे नंबर का यह देश है जहां सबसे ज्यादा चीनी उत्पादन किया जा रहा है। लिंडा हेवुड

खेती में तकनीकी का इस्तेमाल जरूरी

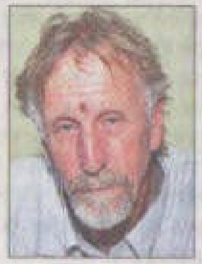

हमने पंजाब के लोगों से जाना कि वहां के लोग पलायन कर रहे हैं। इसलिए वे मैकेनिकल आधारित खेती करना चाहते हैं। हमारे यहां (आस्ट्रेलिया) में आदमी कम हैं इसलिए हमें खेती के लिए मैकेनाइजेशन की जरूरत पड़ती है। दोनों की स्थितियां एक जैसी हैं। चीनी उत्पादन में हम बहुत कुछ एनएसआई से सीख सकते हैं। बदले में हम संस्थान को मैकेनाइजेशन के क्षेत्र में मदद कर सकते हैं। डेल प्राइज, हेड डेलीगेशन

चीनी उत्पादन में मांगा सहयोग

हमने आस्ट्रेलियाई दल को अपने देश में हो रहे चीनी उत्पादन के बारे में जानकारी दी है। 2017 तक पेट्रोल में 10 फीसदी एथनॉल की ब्लेंडिंग करनी है। अभी पांच फीसदी की जा रही है लेकिन इतना एथनॉल उत्पादन नहीं कर पा रहे हैं। हमने आस्ट्रेलिया से मेकैनाइजेशन में सहयोग के लिए कहा है। ऑस्ट्रेलिया अभी पेट्रोल में 10 फीसदी ब्लेंडिंग कर रहा है। इस पर भी सहयोग मांगा है। प्रोफेसर नरेन्द्र मोहन, निदेशक एनएसआई

राष्ट्रीय सहारा 06 मई 2015

आस्ट्रेलियन दल ने दिया खेती के यांत्रिकीकरण का मंत्र

कानपुर (एसएनबी)। महानगर स्थित राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआई) के दौरे पर आये 29 सदस्यीय आस्ट्रेलियन दल के मुखिया डाले प्राइस ने भारत में भी आस्ट्रेलिया की तरह खेती के यांत्रिकीकरण पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि आस्ट्रेलिया में आबादी कम है व खेत बड़े हैं, इसलिए खेती में मशीनों का प्रयोग अपरिहार्य है। इसके उलट भारत में आबादी अधिक होते हुए भी खेती के लिए श्रमिक नहीं मिल रहे हैं, श्रमिकों का पलायन शहर की ओर हो रहा है। ऐसे में खेती में मशीनीकरण जरूरी प्रतीत होता है। उन्होंने खेती-किसानी के मशीनीकरण में दोनों देशों के प्रतिनिधियों के बीच सहमति बनने पर सहयोग की पेशकश भी की।

- एनएसआई दौरे पर आये आस्ट्रेलियन किसानों-शिक्षकों ने ली गन्ना उत्पादन व चीनी उद्योग विषयक जानकारी

स्टडी टूर पर भारत आये आस्ट्रेलिया के उक्त दल में न्यू साउथ वेल्स व विक्टोरिया प्रांतों के चीनी एवं गन्ना उत्पादन से संबंधित निदेशक, शिक्षक, विशेषज्ञ व किसान शामिल हैं। इससे पूर्व उन्होंने पंजाब व राजस्थान कृषि यूनिवर्सिटी का दौरा कर भारतीय खेती-बारी के तौर-तरीकों की जानकारी ली। इसके बाद कानपुर स्थित एनएसआई पहुंचे। मंगलवार शाम को ही दल को लखनऊ के लिए रवाना कर दिया गया, जहां उन्हें गन्ना अनुसंधान संस्थान पहुंचना है। एनएसआई में इस दल को प्रायोगिक चीनी मिल, संस्थान में कसावा व चुकंदर से अल्कोहल व एथेनाल बनाने के लिए चल रहे प्रयोग संबंधित परियोजना कार्य, विभिन्न लैब्स व फार्म हाउस का भ्रमण कराया गया। इससे पूर्व संस्थान के निदेशक नरेन्द्र मोहन ने संस्थान आगमन पर आस्ट्रेलियन दल में शामिल लोगों को स्वागत किया। तत्पश्चात आयोजित एक कार्यक्रम में उन्होंने दल को संस्थान में चल रहे विभिन्न पाठ्यक्रमों व शोध कार्यक्रमों की जानकारी दी। उन्होंने कहा संस्थान द्वारा एक ही छत के नीचे शुगरकेन कृषि विज्ञान, चीनी प्रसंस्करण व सह उत्पादों के उपयोग पर अध्ययन, प्रशिक्षण व रिसर्च का कार्य किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि शुगर इंडस्ट्रीज विषयक तकनीक का प्रशिक्षण देने वाली यह एक मात्र ऐसी संस्था है, जहां प्रशिक्षुओं को अपनी प्रायोगिक चीनी मिल में प्रशिक्षित करने का काम किया जाता है। आस्ट्रेलियन दल के नेतृत्वकर्ता डाले प्राइस ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया व अपने अनुभव साझा किये।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में शैक्षिक टूर पर आये आस्ट्रेलियन प्रतिनिधि मंडल के सदस्य एनएसआई निदेशक से वार्ता करते हुए। फोटो : एसएनबी

निर्धारित मात्रा में सिंचाई कर गन्ना उत्पादन बढ़ाने की कोशिश

कानपुर। एनएसआई के फार्म हाउस में जमीन (मृदा) की आवश्यकतानुसार निर्धारित मात्रा में ग्रेडेड पोटाश व सिंचाई प्रणाली से गन्ना उत्पादन बढ़ाने पर प्रयोग चल रहा है। संस्थान के निदेशक नरेन्द्र मोहन का कहना है कि इस प्रणाली में खेतों में फ्लड सिंचाई न निर्धारित मात्रा में ग्रेडेड सिंचाई के साथ ही जरूरत के हिसाब से पोटाश का प्रयोग किया जाता है। उन्होंने इस प्रणाली पर चल रहे प्रयोग के तहत गन्ने की बेहतर फसल पर संतोष जताया है।

इंटरक्रापिंग में दिखायी रुचि

कानपुर। आस्ट्रेलियाई किसानों में ब्रूस ओलीवर हेवुड, गैरी रसेल डेफलर व पीटर डेविड ओट्स ने गन्ने के साथ उगायी जाने वाली पैदावारों (इंटरक्रापिंग) के बारे में चर्चा की व इसके लाभों को समझा। चीनी उद्योग में जल संरक्षण, इथेनाल उत्पादन व कम कीमत में मैकेनिकल हारवेस्टर का प्रयोग विषयक जानकारी भी ली। संस्थान की डा.सीमा परोहा व डा.संतोष कुमार ने प्रतिनिधिमंडल को गन्ने के वैकल्पिक फीडस्टॉक से एथेनाल उत्पाद बनाने की जानकारी दी।

'एकीकृत ऊर्जा परिसरों' की स्थापना पर जोर

कानपुर। एनएसआई के निदेशक नरेन्द्र मोहन ने बदले परिदृश्य में सिर्फ चीनी बनाने के कारखाने के बजाय 'एकीकृत ऊर्जा परिसरों' की स्थापना को बढ़ावा दिये जाने की बात कही है। उन्होंने कहा कि केवल चीनी उत्पाद के भरोसे मिल का सस्टेन करना मुश्किल कार्य है। चीनी मिलों को विभिन्न तरीकों से ऊर्जा उत्पादन के कार्य से जुड़ आर्थिक दृष्टि से खुद को मजबूत बनाना होगा। उन्होंने कहा कि इस दिशा में कई चीनी मिलों ने कदम बढ़ाये हैं व कई पहले से ऊर्जा उत्पादन गतिविधियों से जुड़े हैं।

आज 06 मई 2015

चुकन्दर एवं गन्ना की उत्पादकता में पोटाश की महत्ता के बारे दी जानकारियां

आस्ट्रेलिया के 29 सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल ने किया एनएसआई का दौरा

कानपुर, 5 मई। आस्ट्रेलिया से आये 29 सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल ने आज राष्ट्रीय शर्करा संस्थान की प्रयोगशाला, अनुसंधान प्रयोगशालाओं के अलावा फार्म का दौरा किया। प्रतिनिधिमंडल के किसानों ने संस्थान के फार्म में विशेष रुचि दिखाई और वहां चल रही गतिविधियां जैसे अधिक चीनी एवं अधिक उत्पादकता वाली गन्ने की प्रजातियों का विकास, चुकन्दर की खेती, गन्ना की उत्पादकता में पोटाश की महत्ता के बारे में जानकारियां हासिल की। संस्थान के निदेशक नरेंद्र मोहन ने आस्ट्रेलिया से आये प्रतिनिधि मण्डल का स्वागत करते हुए

चीनी प्रसंस्करण एवं सह उत्पादों के उपयोग व शोध की सराहना की प्रतिनिधि मण्डल ने

संस्थान व भारतीय चीनी परिदृश्य पर एक प्रिजेन्टेशन भी दिया और गन्ने एवं चीनी की उत्पादकता बढ़ाने के बारे में विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि सिर्फ चीनी बनाने के कारखाने के बजाय एकीकृत ऊर्जा परिसरों की स्थापना पर विशेष बल देना जरूरी है। डा. सीमा परोहा, डा. संतोष कुमार ने विभिन्न वैकल्पिक फीडस्टॉक्स जैसे चुकन्दर, कसावा आदि से एथेनाल उत्पाद के बारे में प्रतिनिधि मंडल को जानकारियां दी। आस्ट्रेलिया से आये किसान लुस ओलीवर, हैमुड, गैरी रसेल, डैपलर, पौल डेविड ओट्स ने गन्ने के साथ उगायी जाने वाली पैदावारों के बारे में चर्चा की और इनके लाभों को समझा। कंपनी निदेशक जोलियन एलिजाबेथ मौथरल ने एकीकृत रुप से शुगरकेन कृषि विज्ञान, चीनी प्रसंस्करण एवं सह उत्पादों के उपयोग परचल रहे शोधों पर आश्चर्य व्यक्त किया। नोयल रिचर्ड थामस ने संस्थान के साथ विचार-विमर्श कर कई परियोजनाओं में विशेषतः कम कीमत में मैकेनिकल हारवेस्टर का प्रयोग, चीनी उद्योग में जल संरक्षण, वैकल्पिक फीड स्टॉक्स से एथेनाल उत्पादन आदि को आस्ट्रेलियाई चीनी उद्योग में लागू करवाने का प्रयास करेंगे।

प्रयोगशाला में उत्पादित पदार्थों की जांच करता आस्ट्रेलिया का प्रतिनिधिमंडल। छाया: आज

TIMES OF INDIA 06 MAY 2015

Australian team evinces interest in sugar institute's functioning

Times News Network

Kanpur: A 29-member Australian delegation of farmers, teachers and consultants, led by Dale Price visited National Sugar Institute (NSI) on Tuesday and evinced keen interest in its functioning.

Speaking on the occasion, Price said that there was a lot to learn from India in terms of newer technologies in sugar industry. India is the second largest sugar producer in the world behind Brazil. Sugar consumption in India is highest in the world.

"Sugar industry in Australia and India can come on a common platform to exchange ideas and help each other. India is a world leader in sugar production and has ability to solve problems related to it," he said.

Talking about the new methodology to irrigate sugarcane fields, he said, "We have adopted a new concept called 'drift irrigation' aimed at saving water in sugarcane fields and still increasing production."

Australian delegation with officials and students of National Sugar Institute

NSI director Narendra Mohan welcomed the delegation. He said: "We are working to improve sugarcane productivity. We are in the process of producing low-cost sulphur-free sugar. We are also working on zero fresh water in sugarcane production with an aim to save water."

India's demand for sugar is 24 million tonnes per year and production is about 26 million tonnes (per year). There are 509 sugar factories in India of which 118 are in Uttar Pradesh alone. He told Australian delegation that two-third of the sugar produced in the country goes to pharma industry and in beverage making and the remaining is consumed by people.

The delegation visited various laboratories to see the work being carried out. "We saw many innovations here which could be implemented in Australia for better productivity," another member of the delegation Noel Richard said.

दैनिक जागरण 06 मई 2015

आगमन : आस्ट्रेलिया के प्रतिनिधिमंडल ने किया शर्करा संस्थान का दौरा

आस्ट्रेलिया व भारत दोनों को चाहिए उन्नत तकनीक

कानपुर, जागरण संवाददाता: तकनीकी दृष्टि से भारत और आस्ट्रेलिया एक समान हैं। आस्ट्रेलिया में काम करने वाले लोगों की कमी है इसलिये तकनीक की जरूरत ज्यादा है। इसके उलट भारत में काम करने वाले लोग तो पर्याप्त हैं, लेकिन यहां पर लोग कृषि से दूर शहर की ओर रुख कर रहे हैं। उन्हें रोकने को तकनीक जरूरी है। यह बात राष्ट्रीय शर्करा संस्थान का दौरा करने आए आस्ट्रेलिया के प्रतिनिधिमंडल के डेल प्राइस ने कही।

आस्ट्रेलिया के 29 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल में न्यू साउथवेल्स एवं विक्टोरिया प्रांतों के चीनी एवं गन्ना उत्पादन से संबंधित निदेशक, शिक्षक, विशेषज्ञ एवं किसान सम्मिलित थे। प्रतिनिधिमंडल ने शर्करा प्रयोगशाला, अनुसंधान तथा फार्म का भी दौरा किया। इस दौरान उन्होंने अधिक चीनी एवं अधिक उत्पादकता वाली गन्ने के प्रजातियों का विकास चुकंदर की खेती एवं गन्ना उत्पादकता में पोटाश की महत्ता के बारे में जानकारी हासिल की। आस्ट्रेलियाई किसानों में सुस ओलीवर हेयुड, गैर रोल डेयलर तथा चील डेविड ओट्स ने गन्ने के साथ उगाई जाने वाली पैदावारों पर भी चर्चा की। प्रतिनिधिमंडल ने संस्थान द्वारा एक ही खेत के नीचे होने वाले विभिन्न क्रियाकलापों की सराहना की तथा कंपनी निदेशक जीलियन एलिजाबेथ मीचहम ने संस्थान द्वारा एकीकृत रूप से शुगरकेन कृषि विज्ञान, चीनी प्रसंस्करण एवं सह उत्पादों के उत्पादन पर चल रही शोधों पर आश्चर्य जताया। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक नरेंद्र मोहन ने संस्थान की उपलब्धियां बताईं। उन्होंने संस्थान की स्थापना से लेकर वर्तमान में चल रही गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। प्रतिनिधिमंडल शहर आने के पहले पंजाब, राजस्थान का दौरा कर चुका है, कानपुर के बाद सदस्य लखनऊ रवाना हो गए।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में दौरा करने आया आस्ट्रेलियाई प्रतिनिधिमंडल के सदस्य।

अमर उजाला 06 मई 2015

आस्ट्रेलिया की टीम ने एनएसआई का दौरा किया

कानपुर(ब्यूरो)। गन्ना की पैदावार और चीनी उत्पादन बढ़ाने में सहयोग करने के लिए आस्ट्रेलिया की 29 सदस्यीय टीम ने मंगलवार को नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) कल्याणपुर का निरीक्षण किया। ट्रेनिंग और रिसर्च की चीनी फैक्ट्री देखी, फिर स्टूडेंट फार्म पर जाकर गन्ना की नई प्रजाति और तकनीक का अध्ययन किया। देर शाम टीम लखनऊ रवाना हो गई। एनएसआई के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि एनएसआई दुनिया का ऐसा संस्थान है, जहां पढ़ाई के साथ फैक्ट्री में प्रशिक्षण की सुविधा है। इसी वजह से आस्ट्रेलिया की टीम यहां आई और पढ़ाई, प्रशिक्षण का अनुभव प्राप्त किया। डॉ. संतोष कुमार ने बताया कि गन्ना की पैदावार और चीनी उत्पादन में आस्ट्रेलिया का अहम योगदान है। यहां आए विज्ञानियों ने स्टूडेंट्स को भी टिप्स दिए हैं।